यात्रा से परमात्मा तक...

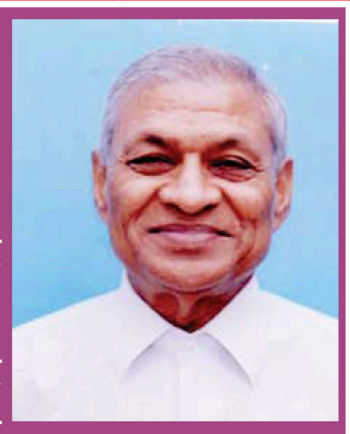

''जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शान्ति की अनुभूति होती थी।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं । मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो '' - ऐसा निश्चयात्मक व परमात्म प्रेम से ओतप्रोत अनुभव व्यक्त कर रहे हैं शांतिवन स्थिति ट्रोमा सेंटर में सेवारत ब्र.कु.विनोद जैन -

मेरा जन्म उ.प्र. के मेरठ शहर में सन् 1943 में हुआ। माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। पिताजी नियमों में इतने सख्त थे कि जब तक हम जैन मंदिर न जायें तब तक नाश्ता नहीं करने देते थे। सन् 1963 में धनबाद में इंजीनियरिंग में चयन के बाद मैं इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स में इंजीनियरिंग करने लगा और वहीं हॉस्टल में रहने लगा। हॉस्टल के नज़दीक जैन मंदिर नहीं था इसलिए दर्शन किये बिना नाश्ता करने में बाधा आती थी। मेरा मन अशांत रहने लगा। एक जैन साधु से मिला तो उन्होंने कहा, पारसनाथ मंदिर (धनबाद से 50 कि.मी.दूर जिसे शिखर जी के नाम से जाना जाता है) की तीन बार यात्रा करेंगे तो आपको भगवान मिल जाएगा। उस यात्रा के नियम कड़े थे जैसे कि रात को 12 बजे यात्रा प्रारंभ करने के समय ठंडे पानी से स्नान करना, नंगे पॉव और निराहार रहकर ही जाना और आना, यात्रा के दौरान किसी भी व्यक्ति, वस्तु का सहारा नहीं लेना।

अनोखे राजयोग का परिचय

उस समय मैं युवक था। मैंने चार दिन में चार यात्रायें लगातार कर ली। यात्रायें पूरी कर धनबाद लौटा। इंजीनियरिंग का पोस्ट ऑफिस अलग था। दोपहर लंच से पहले मैं पोस्ट ऑफिस गया। मैंने एक संस्थान से योग की पुस्तक मँगवाई थी, मैं उसे देख रहा था । उन दिनों ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई उसी कॉलेज में इंजीनियरिंग कर रहे थे। वे भी पोस्ट ऑफिस के सामने खड़े थे। उन्होंने मुझे योग की पुस्तक का अवलोकन करते देखा। उन्होंने कहा इस योग से आपको एक जन्म का स्वास्थ्य लाभ मिलेगा परंतु मैं ऐसा राजयोग जानता हूँ जिससे आपको 21 जन्म का लाभ मिलेगा। यह सुनते ही उसे और जानने की रूचि पैदा हो गई क्योंकि मुझे यह बात जैन धर्म के बिल्कुल अनुकूल लगी। जैन धर्म भी कहता है, आप इस जन्म में जो करेंगे, वो आपको आगे के जन्मों में मिलेगा।

अपने मस्तक में लाइट दिखाई दी

एक बार मोहन भाई सिन्द्री गये और वहाँ के सेवाकेन्द्र से एक पर्चा लेकर आये उसमें शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य था। मैंने पर्चा पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। आठ मार्च, सन् 1964 को धनबाद में सेन्टर खुल गया। वहाँ कानपुर वाले गुप्ता जी, ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु.संतराम वकील, गंगे दादी जी सेवार्थ आये थे। मुझे अगले दिन (9 मार्च को) सेन्टर आने का निमंत्रण मिला। जैसे ही मैंने दायाँ पैर सेवाकेन्द्र के अंदर रखा, मुझे मेरे मस्तक में लाइट दिखाई दी अर्थात् आत्म-अनुभूति हुई। उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि भगवान यदि मिलेगा तो इसी सेवाकेन्द्र में मिलेगा।

मैं साइंस का विद्यार्थी था इसलिए मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक थे पर मैंने निश्चय किया कि मैं प्रश्न नहीं पूछूंगा, बहन जो कहेंगी, मानूंगा। बहन ने पूछा, भगवान कहाँ रहता है? मैंने कहा, सब जगह। उन्होंने कहा, भगवान तो परमधाम में रहता है। मैंने कहा, ठीक है, परमधाम में रहता है। आत्मानुभूति के कारण मन इतना आश्वस्त हो गया था कि कोई प्रश्न करने का सवाल ही नहीं रहा।

हॉस्टल में भी आश्रम से पालना

सन् 1964 में बाबा की मुरलियाँ चलती थीं, महापरिवर्तन होने वाला है। मैंने और मोहन सिंघल भाई ने निर्णय लिया कि हम बाबा की याद में हॉस्टल में खाना खुद ही बनायेंगे। हमने बनाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तो ठीक चला परंतु कुछ शरारती छात्रों ने एक दिन हमारे भोजन-स्थान को अस्त-व्यस्त कर दिया। इससे हमारा अलग से खाना बनाने का उमंग फ़ीका पड़ गया। फिर हम दोनों ने बाबा को सारा समाचार लिखा। बाबा का डायरेक्शन आया कि आज से दोनों बच्चों का खाना धनबाद सेवाकेन्द्र पर ही बनेगा। निमित्त दादी देवी सब्ज ने तीन साल इसे प्यार से निभाया। आश्रम से टिफिन हॉस्टल में आ जाता था।

मन-बुद्धि से समर्पित का वरदान मिला

मुरलियों में सृष्टि परिवर्तन के महावाक्य सुनकर मैंने बाबा को पत्र लिखा, बाबा, मैं चार साल की इंजीनियरिंग नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, इसे पूरा करो, फिर बाबा राय करेंगे। इंजीनियरिंग पूरी करने पर मैंने बाबा को पुन: पत्र लिखा, बाबा पढ़ाई तो पूरी हो गई पर मैं अभी नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, बच्चे, दो साल का स्नातकोत्तर करो। यह पढ़ाई भी पूरी करके मैंने पुन: बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं । मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो। फिर मैं माइन्स में सेफ्टी ऑफिसर (सुरक्षा अधिकारी) के रूप में नियुक्त हो गया।

कर्मों का लेखा सौंपा बाबा को

बाबा ने मुरलियों में कहा, इस जन्म में जो पाप आपसे हुए हैं (जाने या अनजाने में) वो मुझे लिखकर दो तो मैं आधा माफ कर दूँगा। मैंने 64 पन्नों की नोटबुक ली और बचपन से लेकर उस समय (22 साल की आयु) तक किये गये जिन-जिन कर्मों की स्मृति थी, सब लिख दिये। उस नोटबुक को लेकर पहली बार मधुबन आया। बाबा ने मुझे झोपड़ी में मिलने का समय दिया। मैं झोपड़ी के बाहर खड़ा था। बाबा ने मुझे अन्दर बुलाया। मैंने कहा, बाबा, मैं पाप लिखकर लाया हूँ, आधे माफ कर दो। बाबा ने कहा, बच्चे, बाबा यह लिखत नहीं पढ़ेगा, बाबा को अपने मुख से सुनाओ। मैंने रजिस्टर पढ़ना शुरू किया और देखा, बाबा का राइट हैण्ड हल्का-सा हिलता था मानो मेरे पापों से मुझे 50 प्रतिशत मुक्ति मिलती जा रही थी। बाबा के सामने मुझे लगा, मैं दर्पण के सामने बैठा हूँ, छिपा कैसे सकता हूँ। पढ़ते-पढ़ते मुझे कुछ और गलतियाँ याद आईं, मैंने वो भी सुना दीं यह सोचकर कि अभी तो सुनहरा अवसर है, नहीं तो ये सौ प्रतिशत रह जायेंगी। सुनाने के बाद मैं एकदम हल्का हो गया। वो बातें मुझे दुबारा याद नहीं आईं और बाबा का मुझ पर बहुत विश्वास बैठ गया।

बाबा की हर बात राज़ भरी

सन् 1968 में मधुबन में दो भाई जम्मू के और मैं, तीन की पार्टी थी। बाबा ने कहा, बच्चे, आज बाबा आपसे मिलेंगे। हम तीनों बाबा के कमरे के दरवाज़े के आगे खड़े थे। बाबा ने लच्छू दादी को कहा, बाबा से मिलने के लिए इन दो भाइयों को पहले बुलाओ और विनोद को कहो, इंतज़ार करे। यह देख बहुत संकल्प चले कि मैं इतना नज़दीक हूँ, मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? फिर वो दोनों बाहर आये और बाबा ने मुझे बुलाया। बाबा ने कहा, बच्चे, मैं जानता हूँ, आप क्या सोच रहे हो? तुम सोच रहे हो कि मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? इसका कारण है, मुझे आपको गोद देनी थी, उन दोनों को नहीं देनी थी। यदि आपको पहले बुलाता तो वे पर्दे में से आपको गोद देते हुए देखते और उनके संकल्प उठते इसलिए ऐसा किया। जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शान्ति की अनुभूति होती थी। - शेष पेज 10 पर

सेनफ्रांसिस्को। प्रसिद्ध गायक यशुदास तथा प्रभा यशुदास को राखी बांधने के पश्चात ब्र.कु.एलिजाबेथ तथा ब्र.कु.वैशाली।

बैंगलूरू। खाद्य वितरण मंत्री दिनेश गुन्डुराव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रामनाथ। साथ हैं ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.सरोजा तथा ब्र.कु.सुरेन्द्रन।

भाल्की-कर्नाटक। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन अभियान का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल, विधायक ईश्वर खाण्डरे, ब्र.कु.राधा व अन्य।

भैरहवा-नेपाल। कृषि विकास बैंक के कर्मचारी, व्यापारी, शिक्षक,आदि वर्ग के लिए आयोजित राजयोग शिविर के बाद ब्र.कु.शान्ति, ब्र.कु.भूपेन्द्र, ब्र.कु.ईन्द्रा तथा ब्र.कु.सत्या समूह चित्र में।

भोपाल-म.प्र.। एन.एफ.एल.कम्पनी में तनाव मुक्त कार्यक्रम के पश्चात् प्रबंधक दयाल जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रीना।

छोटा उदेपुर। नगर सेवा सदन के प्रमुख नरेन्द्र जायसवाल व उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मोनिका तथा ब्र.कु.सुधा।

गोरखपुर-उ.प्र.। रेलवे ऑफिसर्स क्लब में कार्यक्रम के पश्चात् जनरल मैनेजर के.के अटल, सी.एम.ई.अनिल शर्मा, सी.सी.एम. अरविन्द जी, सीसीई आर.पी.निबर्या, ब्र.कु.पारूल तथा ब्र.कु.सावित्री।